तैयारी

शशांक

शशांक – बहुत सम्मानित कहानीकार। उनके उन्नीस साल का लड़का, शामिल बाजा, कोसाफल कथा संग्रहों की कहानियां लोगों की याद में हैं। कम लेकिन सच्चाई और संवेदना की भीतरी तहों तक जाकर लिखना उन्हें प्रिय है।

धारा एक सौ चौआलीस की सुविधा के लिए चौड़ी सड़क पर आड़ी रेखा पड़ी थी। दोनों ओर लोहे के डंडे। सुविधानुसार अवरोध बनाया जा सकता था। आगे जाकर ऐसा अवरोध और बना था। पीला रंग पुता था। दोनों अवरोधों के बीच की जगह बहुत बड़ी थी। शहर का यह हिस्सा बिल्कुल अलग है। उत्तेजित और गर्म। सड़क के एक ओर विश्राम भवन थे। वे खंड एक, खंड दो, खंड तीन के नाम से पुकारे जाते थे। उनमें विधायक खादी के परदों से ढंके कमरों में रहते थे। वे कभी कभी आते थे। उनके क्षेत्र की जनता, नौकर या नौकरनुमा टहल करते कुछ लोग होटल को अंगूठा दिखाते हुए सोने की कोशिश करते थे। सो नहीं पाते थे। दूसरे क्षेत्र के लोग बगल के कमरों में राजनैतिक विश्वास के चलते लम्बी बहसों में अपने जानकार होने को सिद्ध करने के बाद स्थानांतरण या नौकरी के आवेदन की ताजा स्थिति पर अंदाजा लगाते। पुराने दर्दीले गीत, टेलीफोन की घंटियों और टीवी के निरंतर सधे संवादों के बीच वे कराह कर मंत्री के यात्रा पर आने या जाने की सूचना देते। ऊंचे स्वर में। चपरासी को इस सूचना पर दिये गये धन का विश्वास झलकता था। सूचनाएं नींद को काट अगले कमरों की तरफ बढ़ जातीं। इन खंडों से अलग पारिवारिक खंड था। बच्चों के रटने और धीरे धीरे उनींदे होते जाने की बेबसी थी। वे शहर के अच्छे स्कूल में जल्द से जल्द अपने कस्बे को बनाये रखने के लिए जग रहे थे। कडुवी आंख लिए।

अवरोधों के बीच में ही सड़क के दूसरी तरफ हरी पत्तियों और मोटी दीवार के पीछे कोई लम्बी चौड़ी इमारत थी। राजभवन। सारे द्वार बंद थे और अंदर से कोई आवाज नहीं आती थी। उससे ही लगी हुई विधानसभा थी। जब बैठकें चलतीं धारा एक सौ चौआलीस तुरंत लग जाती। प्रदेश के अनेक कोनों से आये जथ्थे अवरोध के पास रोक दिये जाते। कुछ जथ्थों के पास पुराना अनुभव होता। वे अवरोध के इस ओर आते। उन्हें यत्नपूर्वक बस में चढ़ा कर कहीं दूर उतार दिया जाता। जोशीले नारों और फूली नसों का दर्द लिए वे बस में जल्दी से घुस नहीं जाते। अवरोधों के बीच भी अनेक जत्थे थे। वे हंसते हुए उन्हें बस में जाते देखते। पान खाते और थोड़े से चूने की मांग करते। दो तीन की संख्या में धारा से बचते, विधायक जी का इंतजार करते। कुछ नवयुवक जोशीले नारों की तुकबंदी सिगरेट की पन्नी पर उतारते। विधायक जी उन्हें दूर से आते दिख जाते। थकान और उत्साह का अद्‌भुत मेल विधायक जी की गर्दन पर चूता। पसीने सा। पीछे कुली होता। दिन भर की कार्यवाही और प्रश्नों की किताबों का गठ्ठर सिर पर उठाये। नहीं कुली नहीं। क्षेत्र का कोई जागरूक सदस्य या नौकर या नौकरनुमा टहलुआ। सबको भूख लग आती। अवरोध से सटे कतार में भोजनालय हैं। धूप पराठों की गंध लिए राजभवन की गहरी हरी फलक पर सुस्ता रही थी। धूप रंग हवा। गाल पर ठहरे ओज सी।

www.tadbhav.com

खिली हुई। यही शहर की हवा का यहां रूप है। सड़क पर रेल या बस नहीं थी फिर भी लोग बातचीत के बीच बीच में चौंक कर इधर उधर देखते।

"आइये खाना खा लीजिये।" अपनी चड्डी से प्लेट को रगड़ते हुए लड़का बोलता है। उसका काम भोजनालय के आगे खड़े होकर बगल वाली दुकान से ऊंची आवाज लगाना है। खाने की याद से लोग चौंक जाते हैं। बाहर से आये आदमी को इसके बाद भूख लगती है। वे तरकारी की किस्म बतलाते हुए अगली बस का समय पूछते हैं।

"जगह खाली है। आ जाइये।" लड़का हंस कर मुझे बुलाता है।

"अरे! यहीं का हूं। घर से खाकर चला हूं। समझे।"

"भोजनालय से लगी पान की गुमटी है। गुमटी के मुखड़े पर ताजा पत्रिकाएं वंदनवार सी लटकी हैं। गुमटी का फर्श बीचोंबीच कटा हुआ है। पान वाले का आधा शरीर उसके अंदर है। इससे वह लोगों को बैठा हुआ दिखता है। तखत पर आसन जमाये। जबकि पान पर कथ्थे की डंडी के साथ एक लय में पैर कदमताल करते हैं। चारों ओर आईने हैं। उजाला, लोगों के रोशन चेहरे और भरे मुंह में घुलते शब्द ओठों की थिरकन में चारों तरफ दिखलायी पड़ते। इसके साथ ही लगता कि पानवाला भी गोष्ठी में बतियाने आया है।

"एक सिगरेट देना यार। वो। और ये बताओ कि मेडिकल बोर्ड कहां है?"

उसके मगन हाथ रुक गये। मुझे देखते हुए उसने ही सवाल किया, मेडिकल बोर्ड?

"यहीं कहीं है। अरे नहीं। अस्पताल नहीं। बस, जांच करते हैं।"

"अच्छा। आजकल यहां ऐसे ऐसे दफ्तर खुल गये हैं कि पता ही नहीं चलता। उस दफ्तर को देख रहे हैं मंदिर प्राधिकरण। ये दूसरी जगहों में बने इस प्रदेश के मंदिरों का हिसाब किताब रखता है।"

"ये तो बहुत जरूरी है।" मेरे बगल वाला जिम्मेदारी से हंसा और बोला, "दरअसल यह शहर गुमशुदा लोगों का है। लापता लोगों के द्वारा बनाया गया नगर। यहां गुमशुदा लोग बसते हैं।"

"बहुत ऊंची भाई मियां। क्या? पर हम गली गली को जानते हैं।"

पान वाले ने अपने पुराने बाशिन्दे होने की पहचान को खोने नहीं दिया।

"होंगे। पर है तो ये शहर गुमशुदा लोगों का। अच्छा बताओ पांच साल बाद यहां कोई दिखायी पड़ता है। जहां से भाग कर आते हैं, वहीं नहीं पहुंच जाते? फिर कोई नया आदमी आ जाता है, उसकी जगह लेने।"

"आप तो इधर की कह रहे हैं। वहां पूरा शहर पड़ा है।"

"उसे शहर कहते हो। एक तरफ गरीबी और सड़ांध है। जिसे तुम पुरानी रवायत कहोगे। दूसरी तरफ सरकारी क्वाटरों की कतारें हैं। एक से, नम्बर डले मकान। वहां भी गुमशुदा लोग ही रहते हैं। कौन जानता है उन्हें। कुछ सालों बाद कहां मरखप जाते हैं। किस शहर में?"

"आप तो ये बतलायें कि मेडिकल बोर्ड कहां होगा?"

"माफ करें! मैं तो बाहर से आया हूं। अपन तो बस तुरंत काम हो, तुरंत भागो। ये कोई शहर है। दहशत होती है।"

मैं पानवाले की ओर मुड़ा, "बताओ भाई। पान गुमटी पर पता न चले तो हद है।"

"आप ऐसा करो नीचे की ओर निकल जाओ। पैदल पैदल। वहीं इसी तरह के दो तीन दफ्तर हैं। मेरे ख्याल से यहां नहीं। और भाई जान अपना तो शहर यही है। यही गुमटी। सारी जगहों के लोग यहीं मिल जाते हैं। मामूली है यह शहर!"

गुमटी से हथ्थे के सहारे मोटी रस्सी धीमे धीमे सुलग रही थी। धुआं ऊपर की ओर उठता था। मैंने कमलनाल सा उसे उठाया। सिगरेट जलाने लगा। कहा, "हां सही कहते हो हमारा शहर मामूली नहीं।"

वह आदमी हंसा, "ठीक कहते हैं, गुमशुदा लोगों के इश्तिहार छपाने पड़ते हैं। हम लोग बेचारे रोज अखबार पढ़ते हैं! इतने महत्वपूर्ण हैं आप सब!"

www.tadbhav.com

मैंने धुंए से चेहरा थोड़ा आगे निकाला। अलग होने के लिए थोड़ा सा हिलाया। हट गया।

भोजनालय के काऊंटर पर मोटा आदमी ऊंघ रहा है। उसके ऊपर एक से कई फ्रेम लगे हैं। बहुत सारे भगवान। न सूखने वाले हार। लाल कपड़े में बंधा नारियल हिल रहा है। पैंडुलम। काउंटर पर फोन है। चपटा हरा। पूरे दिन का नक्शा खिंच गया। शाम से पहले खाली हो जाऊंगा। तुरंत याद आयी। मंजरी। उसकी फोन पर हंसी और चुप्पी दोनों गाने के बेजोड़ हिस्से लगते हैं। ओंठ और उसके कानों के बीच स्वर की इतनी कम दूरी के कारण फोन हमेशा जीवंत लगता है। हाथ जैसा। पोर जैसा।

"क्या फोन कर सकता हूं?"

चौंका नहीं। वह ऊंघ नहीं रहा था। सुस्ता रहा था। आंखें बंद किये। उंगली से उसने बताया। दो रुपये। फोन पर भी उसने लिख छोड़ा था। दो रुपये दीजिये। मैंने एक्स रे रिपोर्ट और दूसरे लिफाफे काउंटर पर रखे। वह पीला आवरण देख कर चौंक गया। बोला, आराम से बैठ जाइये। एक्स रे प्लेट आज भी लोगों को चौंका कर जगह खाली करती है। थोड़ी सी सहानुभूति के लिए। दाल फ्राई और प्याज की बघार, बातचीत और अचार की मांग के बीच बात करना क्या सही होगा? अक्सर उससे फोन पर बात करने के पहले आसपास की चीजें याद आती हैं। चीजें कहां! लोग। चीजें न देखो तो चुप सी लगा करती हैं। भीड़ और शोर के बीच अपनी कलाई के आसपास सनसनी को पाया। काउंटर पर बेडौल ग्लास में गले तक पानी भरा है। फूल ठुंसे हैं। गुलाब की कुछ पत्तियां नीचे झर गयी हैं। उनमें भी सनसनी है। बहुत कोमल। हवा में थरथराती। मोबाइल सो रहा है। फोन लगाता हूं। दूसरी तरफ से नम्बर दोहरा कर कोई ठहरी आवाज में कहता है, हैलो। तुरंत रिसीवर रख देता हूं।

"इंगेज है।" बुदबुदा कर मोटे की तरफ देखता हूं। हंसी। प्रतीक्षा। फिर लगाता हूं। वही ठहरी कठोर आवाज। कुछ सुनगुन लेने के लिए चुप्पी। दोबारा फुर्ती से रिसीवर रखता हूं। हथेली और रिसीवर के बीच पतली तह बन गयी है। पसीने की। वह मेरी ही तरह कुनकुना बन गया है। शरीर का तापमान।

"लगता है आजकल लोग बहुत फोन करने लगे हैं। है कि नहीं? या कुछ फोन में ही गड़बड़ी है। बार बार इंगेज।"

"नहीं नहीं। ठीक है यह। जल्दी करो। करना हो तो।"

उसने चिड़चिड़ा कर कान में ऊंगली डाली। पेचकस सा घुमाया। फोन उसकी दुकानदारी का अंग नहीं था। अड़चन थी जो परोपकार के खाते में थी। इस बार नहीं लगा तो कोई बात नहीं। चल दूंगा।

"हैलो। कौन चाहिए।"

धमकाने का स्वर। मंजरी ही थी।

"आप ही मंजर साहब। क्या आपका फोन इंगेज था। इतनी देर बात करते हैं आप? मोबाइल भी स्विच ऑफ। कम से कम रिसीवर तो उठाइये।"

इंगेज? वही आवाज थी एकदम विपरीत। स्निग्ध और खुशी से लबालब। गले की गहराइयों में बहता जलप्रपात "इंगेज! अच्छा आप थे हुजूर। भैया से कह क्यों न दिया।"

"मैं देखो दोपहर बाद तक फ्री हो जाऊंगा। मेडिकल बोर्ड है न आज। वही चक्कल्लसें। हां। हां। देर तो लगेगी।"

"सुनो। सुनो। ये गाना सुनो। कितना अच्छा है। तब तक बाथरूम का नल बंद करके आती हूं।"

"सुनिये। जल्दी है..."

खट्। सिन्थेसाइजर। तबला। बांसुरी। घुंघरू। इश्क। दो पल। चुम्बन। नींद। ख्वाब। बेकरारी। खट्। खट्। हैलो कैसा लगा?

"ये तो बहुत जरूरी बात है। आपके मुंह से दोबारा सुनना चाहूंगा। दोपहर तक। हां। उसके

www.tadbhav.com

बाद। बी सी एल। ठीक चार। अच्छा रखता हूं।"

"नहीं। नहीं। सुनो तो।"

"अच्छा जी। जै हिन्द।"

बहुत जरूरी काम निबट गया। कंधों ने उचका कर बताया। मोटा संख्या गिन रहा था। तीन हुए? क्या बीमारी है आपको? तीन या चार? हैं!

उसकी हमदर्दी और उत्सुकता रिपोर्ट के फ्रेम में फंसी थी। उसके चेहरे पर अनजाने ही आत्मीयता का भाव आ गया। बीमारी जोड़ने का गोंद हो जैसे।

हां न की स्थिति में केवल बोला, बस्स ऐसे ही।

"तीन हुए। हैं न। दो इंगेज। चलो एक का ही दे दो।"

मैं खुश हुआ। मेरा गणित काम आया। जेब से रुपये निकालने लगा। वह अभी भी डूबा हुआ था। बीमारी का नाम पता नहीं चल पाया। मैंने उसकी आंखों में देखा। वहां भूला नहीं था। लेनदेन की चमक नहीं थी। गहरी टीस। चिन्ता। बीमारी छिपा लिए जाने का आहत भाव। मालुम नहीं क्या हुआ मैंने पांच और एक छः रुपये काउंटर पर रख दिये। तीन फोन काल के पूरे... "बहुत बड़ी बीमारी हो सकती थी काका।"

"फिर?"

"बच गया। फोटो ही ठीक नहीं आयी!"

मेरे साथ वह भी हंसा। जैसे चिन्ता उड़ गयी। तश्तरी में से सौंफ निकाली। कुछ ज्यादा ही मिश्री। एक अनावश्यक टूथपिक। उसी की नोक से शुक्रिया कहता सड़क पर आ गया। गाने के बोल आखिर हैं क्या? कुछ याद न आया। धुन भूली बिसरी अंदर घुल रही थी। मंजरी से पूरा का पूरा गीत सुनने के लिए बार बार कहूंगा। उसका चेहरा रंग जायेगा। खूब गुलाबी। भक् भक्।

"मुख्यमंत्री जी ने कहा है भई। खुद मेरे हाथ पर हाथ धर कहा। कल आइये अर्जियां ले आइये। सब ठीक कर देंगे।"

भोजनालय में मुड़ते हुए चार पांच के गोल में कोई ऊंची आवाज में हांका लगा रहा था।

तुम सालो तुच्छ। यही करते रहोगे। अर्जियां। दाल फ्राई। फोकट में आधा टुकड़े नीबू का लोभ।

वे बहुत उजले और कड़क कपड़ों में भी लग रहे हैं दीनहीन। अ हा। गाने के बोल के पहले शब्द हैं : तुम्हारे शहर में मेरे इश्क के चर्चे।

तीखी धूप में जल्दी चलते हुए दफ्तर ढूंढ लूंगा। है तो यहीं कहीं।

अमलतास और गुलमोहर के पेड़ सड़क के किनारे पंक्तिबद्ध खड़े थे। नीचे छाया कहीं कहीं विरल थी। उनके बीच डगाल का चित्र बनता। धीमे हिलते। हल्की नमकीन कसैली गंध को लिए दिये। फूलने में वक्त है। चटक धूप में उगे गुलमोहर के फूल ही होंगे। सड़क सूनी है। दफ्तर लग चुके हैं। सबसे पहला दफ्तर किसी नृत्य के विकास के बारे में है। आगे कहीं मेडिकल बोर्ड दिखलायी नहीं पड़ता। कोई आदमी भी नहीं। बस इसी दफ्तर के आगे कुछ टूटी कुर्सियां बिखरी हैं और एक लड़का एक डोर से बुन रहा है। तरह तरह के रंग। मैं उसके पास खड़ा होता हूं। वह कुर्सी को दोनों टांगों के बीच संभाले है। धागानुमा प्लास्टिक को बुनावट के बीच में से ऊपर तक खींचता है। बहुत ऊपर तक। जहां तक उसके कंधे उठ सकते हैं।

"सुनो यार। यहां कहीं मेडिकल का दफ्तर है?"

तल्लीनता को छोड़ वह घूमा। नेत्रहीन। दुविधा में मैं चुप खड़ा रहा। बोल चुका था।

"हां है। मुड़ कर आगे जाइये। पोस्ट ऑफिस का लाल डब्बा मिलेगा। उसी के पास। बस लगा हुआ।"

"अच्छा यार।"

www.tadbhav.com

वह अधबुनी कुर्सी पर हाथ रख बैठा रहा। जैसे कुछ और बताना चाह रहा हो। मैं रुका नहीं। मुड़ा। अंधविद्यालयों में कुर्सी बुनने के अलावा और क्या काम सिखाते हैं। यह पता लगाना है। नेत्रहीन अपनी सुंदर बुनावट कुर्सी पर कस देते हैं। वे कुर्सियां जो कहीं न कहीं किसी न किसी मेज के बीच छुप जाती हैं। बेलबूटे लिए।

पुरानी बेकार एम्बुलेन्स और जीप का मालगोदाम था। ईंटों के ऊपर वे खड़ीं थीं। टायर सब गायब थे। धूल और पत्तियों से ढंकी वे बरसों से यहां होंगी। पूरे आंगन को घेरे। उनके बीच से आने जाने का रास्ता निकाला गया था। दालान में दीवार से सट कर बेन्च थी। कुछ टूटी कुर्सियां। थोड़े से लोग थे। अंतिम आदमी के बाद मैंने कागजात रखे और बैठ गया। पैरों में चलते रहने की गति अब धीरे धीरे नीचे उतर रही थी। वह आदमी सिकुड़ कर बैठ गया। बेन्च में हिलडुल हुई। वह हंसा। बेहद दुबला और मार खाया। हम दोनों के बीच कुछ कागजों का अंतराल था। उसने एक्सरे रिपोर्ट उठा ली। उसको ऊपर उठा कर बहुत नजदीक से देखने लगा। हड्डियों का चंदोबा तन गया। बहुत जानकार बन कर बोला, नहीं। नहीं। कुछ नहीं है। नौकरी के लिए न? देखिये आपको मुझसे पहले बुलायेंगे।

"आप कैसे?"

"उन्हें देख रहे हैं न। वो। कुर्सी पर मुंह सुजाये बैठे हैं। हमारे साहब हैं। लाये हैं।"

"क्या हुआ है?"

"होना क्या है। महीने का छः सात सौ का बिल बनाते हैं। मेडिकल भत्ता। इन्हें तकलीफ होती है। लेकर आये हैं। पिछली बार भी लाये थे।" वह बिना मतलब जोर से हंसा। उसके साहब ने चौंक कर देखा। चेहरा गुब्बारे सा तना था। फूला।

"क्या हुआ?"

"होना क्या है! सुरंग बनानी पड़ती है। इनको बुरा लगता है। नकली बीमारी सिद्ध करने के लिए पिछली बार भी लाये थे। ठेंगा। कुछ न कर पाये। नाड़ा खोल दिया। घबरा गये। बोले बांधो बांधो। हमने कहा, डॉक्टर साहब उठान ही नहीं होता।"

उसने लापरवाही से पैरों को फैलाया। ऐंठा। जैसे पंछी बन जाना चाहता हो। हिलते हुए बोला, आसान है क्या। फिर लाये हैं! बात ऐसी है कि नौकरी में आप कबरबिज्जू नहीं बने तो सब आपके दांत गिन लेंगे।

किसके पास बैठा हूं मैं। यह नंगा। तिक्त होकर बोला, दांत छुपाने के लिए क्या मुर्दे खाना जरूरी है।

वह सहसा स्थिर हो गया। संभाल कर धीरे से बोला, बड़े ढोंग के अंदर छोटे छोटे ढोंग करने ही पड़ते हैं। मैं कहता हूं आप भी करेंगे।

उसके इस विश्वास पर गाली देने की इच्छा हुई। मन में दुहराया। बोला, आज क्या करोगे?

"देखना है! अरे नहीं। इनमें इतना साहस नहीं है। लिखा पढ़ी करेंगे। और क्या। खैर। आप तो पहले फुर्सत पा जायेंगे।"

कमाल है। इतना आत्मविश्वास। सांप सी लचक। कसे घोड़े सा तना है साहब। मेरा बुलावा आ गया। अदालत में आवाज लगाने की नकल करती आवाज। दरवाजा बंद था। बाहर कुर्सी पर बैठे आदमी ने एक कागज ही लिया। उसकी दूसरी प्रति पहले से ही वह लिए था। नाम पढ़ कर वह मेरे चेहरे से मिलान करने लगा। नाम जैसे फोटो हो। बाकी कागजात विरक्ति से लौटाते हुए बोला, ये सब अंदर ले जाइये। वे जानें उनका काम जाने।

वह किसी बात से चिढ़ा बैठा था।

"क्या बहुत देर लगेगी?"

"देर? उन्हें चाय पानी से फुर्सत मिले। तब न। मेरी पांच की ट्रेन छूट गयी तो घर कब

www.tadbhav.com

पहुंचूंगा। रोज रात को धक्के खाते जाओ। आप तो घुसो।"

वह किसी पास के कस्बे में रहता होगा। अभी से ट्रेन में बैठा है।

दरवाजे को खटखटाया। हौले से। आवाज की प्रतीक्षा नहीं की। सुनायी नहीं देती। अंदर एक पुरानी मेज को घेर कर वे पांच बैठे थे। सचमुच उनके सामने कप रखे थे। उनमें सबसे बूढ़े डॉक्टर ने ढीले हाथों से कुर्सी की तरफ इशारा किया। सारी रिपोर्टें ले लीं। वे हरेक कागज या पर्ची को देखने के पहले हंसते थे। नाम दुहराने के पहले भी हंसे। वे एकदम बूढ़े नहीं होंगे। रिटायरमेण्ट में समय होगा। कुछ साल या कुछ माह। उन्होंने सभी की ओर बारी बारी से देखा और ढीले पड़ गये, "चाय पियेंगे?"

कप खाली थे। सिर हिला कर बोलना ही था नहीं।

वे हंसे और बोले, "चिन्ता की कोई बात नहीं है। अभी सब हुआ जाता है। आप जानते ही होंगे नौकरी में आने के पहले आदमी को हर तरह से मजबूत और स्वस्थ रहना चाहिए। आपने अच्छा किया जो कम्प्यूटर की लाइन चुनी। क्या है इसका काम यहां?"

"सर। हर जिले में कम्प्यूटर लग रहे हैं। सारे आंकड़े जमा किये जायेंगे। प्रोजेक्ट बनेंगे। इस तरह हर जिला एक टर्मिनल के सहारे पूरे देश से जुड़ जायेगा।"

"टर्मिनल?" पुड़िया खोल कर उन्होंने पान निकाला और किसी तरह पूरा का पूरा मुंह के अंदर घुसाने लगे। हंस नहीं सकते थे। मुंह को इधर उधर किया फिर अस्पष्ट सा बोले, "टर्मिनल के सहारे पूरा देश जुड़ेगा!"

"जी। जिलों के आंकड़े राजधानी में और यहां के पूरे आंकड़े दिल्ली में। अलग अलग प्रोग्रामिंग होगी।"

मैं उनके खानपान से सहज हो गया। यहां अस्पताल की गंध नहीं है। बातचीत है। हंस कर बोला, सब कमाल आंकड़ों का है।

वे लाल दांतों से हंसे। बोले, आदमी इन आंकड़ों को धो सुखा सकता है। ओढ़ बिछा सकता है। कम्प्यूटर ये नहीं कर सकता। सहसा उन्हें याद आया, टट्टी पेशाब की जांच?

वह हमारे बीच रखी थी। मैंने इशारा किया। उन्होंने एक पर्ची निकाली और बगल में बैठे डाक्टर के पास खिसका दी। वह यंत्रवत दूसरे फार्म पर भरने लगा। बूढ़े डाक्टर ने दोस्ताना ढंग से पूछा, कोई पेटदर्द वगैरह तो नहीं है?

"नहीं जो भी खाता हूं पच जाता है।"

"अच्छा है। अच्छा है। सबसे बड़ी नियामत। क्या करते हैं आपके पापा?"

मैंने उन्हें बतलाया कि वे कृषि विभाग में अधिकारी थे। वे हंसे 'कृषि विभाग'! खूब खाइये। भोजन को अच्छी तरह चबा चबा कर खाना चाहिए। मुझे तो अब कोलाइटिस से छुटकारा मिला। वरना बहुत लम्बा साथ रहा।

"सर। आप जगह जगह रहे इसलिए हुआ। एक जगह जम कर बीस साल निकाल दिये होते तो हाजमा ठीक रहता।" उनकी दूसरी बगल में बैठी डॉक्टर ने कहा। वे गहरे नीले रंग की साड़ी में थीं। सफेद कोट उन पर अच्छा लग रहा था।

"नहीं मिस चंदा। आदमी का पेट ही आदमी का दिमाग है। मलेरिया विभाग में बरसों काम कर रहे आदमी को परिवार कल्याण में पटक दो तो दिमाग नहीं झनझनाता। पेट। बस वही बिगड़ता है।"

"मैं, सर, जबसे डिपार्टमेण्ट में आयी हूं भूख ही नहीं लगती। मर गयी।"

"आपके लिए फायदेमंद है। आपकी खूबसूरती।"

हंसी की छोटी छोटी लहरें उठीं। वे सब हंस रहे थे। खाने की अनिच्छा और उसकी सुंदरता के गुणगान में। मैं हंस नहीं सकता था। गले में पड़े लाकेट और उसके स्पंदन को देखने लगा।

बूढ़े डॉक्टर ने कानाफूसी के अंदाज में कहा, "दरअसल नौकरी में आने के पहले उदरपेशियों का सुविकसित होना जरूरी है। जिगर या तिल्ली भी बढ़ी न हो।" वे रुके। कुछ याद आया। हंसे, "हालांकि

www.tadbhav.com

आजकल हमारे ही कुछ नौजवान डॉक्टर इसका शिकार हो जाते हैं। शराब। तिल्ली बढ़ेगी ही।"

उन्होंने अंतिम छोर पर बैठे डॉक्टर को घूर कर देखा। उसने सिर झुका लिया। कुछ रंगबिरंगी प्लेटें थीं। वह ताश की तरह फेंटने लगा। बूढ़े डॉक्टर ने मेरी तरफ देखा। मानो मुझसे बात कर रहे हों, उम्र बढ़ने के साथ उदर और तिल्ली दोनों ही बिगाड़ने का एकसूत्री काम बना लेते हैं नौकरीपेशा वाले।

मैं थोड़ा आगे झुक कर उनकी बात सुनने लगा। अचानक वे बहुत धीमे बोलने लगे थे। अपने आप में गुनगुनाते। ठीक है। मुझसे ही बोल रहे हैं तो ताश वाले को खेलने देता हूं। बोला, सर मेरे ख्याल से अब ऐसा नहीं है। नौजवान अपनी फिजिक का ज्यादा ख्याल रखते हैं। जैसे लड़कियां। मैंने कहीं पढ़ा है, लोग बोतल की बजाय अब कैश लेना पसंद करते हैं। वे पुरानी ऊंचाई पर आ गये। कहा, मैं आपसे कुछ छुपाना नहीं चाहता। विज्ञान के आदमी को तथ्य पसंद आते हैं। आप सुन सकते हैं। आपको नौकरी के समय यह आना ही चाहिए। प्रत्येक कान से 610 सेण्टीमीटर की दूरी से कानाफूसी। अच्छा है।

उनके इस अमिनय से हतप्रभ रह गया। वे कुर्सी से टिक गये। माथा पसीने की बुंदकियों से भर गया। सांस छोड़ कर बोले, मिस चंदा इनकी ऊंचाई नाप लीजिए। साथ में आप इनके मेरुदंड की हालत भी देख लें।

वे उठीं। मैं भी। बूढ़े डॉक्टर लगातार बोल रहे थे। जैसे कोई पाठ याद कर रहे हों। रीढ़ की हड्डी की स्थानिक कोमलता देख लें। मेरुदंड की हरकत भी इसमें शामिल हो। हल्का काईफोसिस या लोडोसिस चल सकता है। आह। रीढ़ की हड्डी। पूरी तरह झुक सके। आराम से।

उन्होंने बूढ़े डॉक्टर पर ध्यान नहीं दिया। वे टिक कर आराम कर रहे थे और बोल रहे थे। वे मुझे दीवार के पास ले गयीं। लकड़ी की एक टिकटिकी थी। उसके मंच पर खड़ा हो गया। छूने से बचते हुए उन्होंने स्केल से सिर को दबाया। सेण्ट की हल्की खुशबू आसपास फैल गयी थी। अभी तक कोट और त्वचा के बीच छुपी थी। यहां से, दीवार से सट कर कमरा बड़ा और खाली दिखायी देता था। हालांकि आसानी से पहले देख सकता था पर अब दिखायी पड़ा। उघड़ी दीवार पर गांधी जी की तस्वीर थी। मुख्यमंत्री की तस्वीर थी। दोनों के बीच लम्बा कैनवास था। पूरी लम्बाई में मानव कंकाल का चित्र। नीली पीली नसें। हंसती हुई खोपड़ी। किटकिटाती। उसके ठीक नीचे दो पैरों की हड्डियों के बीच कुर्सी के पुश्त पर बूढ़े डॉक्टर की मुंडी लटकी है। जैसे वे तीनों तस्वीरों का कोई थ्री डी हिस्सा हों। यह क्लीनिक से अलग है। बेरंग कमरा। सेण्ट की खुशबू क्या इसी कारण आ रही है? बहुत नजदीक। मेरी त्वचा से बचती। उनके ओंठ जैसे उग रहे हों। प्रस्फुटन। हल्की छुपी धारियों में लिपस्टिक धातुई चमक भर रही थी। रीढ़ में रेशमी धागों की सरसराहट। मैं जानता हूं मेरा चेहरा लाल हो गया होगा। मुश्किल से बोला, ऊंचाई और शरीर के वजन में क्या तालमेल रहता है?

उन्होंने मेरा तमतमाया चेहरा देखा। परदा गिर गया। खुशबू छुप गयी। वे स्थिर हो बोलीं, हूं।

"ठीक पूछा आपने। बिल्कुल रहता है। बल्कि सेना में हम इस तरह की लापरवाही करें तो निकाल दिये जाते। पर हमारे यहां एक समीकरण है। लम्बाई तो क्या खाक बढ़ेगी। चौड़ाई ही बढ़ती चली जाती है। वही पेट। जिस दिन यह बढ़त रुकती है वह दिन अंतिम होता है। मृत्यु का।" बूढ़े डॉक्टर ने जोर से कहा। उतनी ही जोर से हंसे। उन्होंने अपने सहयोगियों को देखा। मैं उनके लिए मामूली था। ऊबे थे। जल्दी जल्दी कागजी कार्यवाही पूरी कर रहे थे।

"डाक्टर देसाई, इनका मेरुदंड देख लें। मैं ब्लड रिपोर्ट चेक करती हूं।"

वे मेरी तरफ देख नहीं रहीं थीं। वे कुशल डॉक्टर नहीं बन सकतीं। सेण्ट। नजरें बचाना। त्वचा से परहेज। वे एक डिपार्टमेण्ट से दूसरे डिपार्टमेण्ट में मन बदलती रहेंगी। अन्न की शिकायत करते। अकस्मात यह सोच मन हल्का हो गया। मैं लम्बी टेबिल पर पट लेट गया। मेरुदंड की ठक् ठक् सुनने। ताश वाला उठा। डॉक्टर देसाई। पीठ पर वह उंगलियां फेरने लगा। पादरी की भांति हीलिंग टच। उसके चेहरे पर दुख की पन्नी चिपकी थी। मेरुदंड के रेशमी धागों से वह सेण्ट की रही सही नमी पूरी कर

www.tadbhav.com

रहा था। थकान के साथ डॉक्टर देसाई बोले, उठिये कुछ रंग देखते हैं।

उन्होंने ताश के पत्ते उठा लिए। वे ताश के पत्ते नहीं हैं। अलग अलग रंग के गोले। छोटी छोटी फफूंद की तरह। वे उदास आंखों से पत्तों को देख रहे थे। अनमने भाव से। किस कार्ड से शुरू किया जाये। जैसे कोई लम्बी रकम हारने के बाद अपने रंग का पत्ता नहीं देखना चाहता। फिर भी छिप छिप कर देखता हो। उसांस भर उन्होंने एक पत्ता निकाल लिया, "बताइये?"

"क्या?"

"कौन सा रंग है?"

हालांकि लगा वे कहना चाहते हों कुछ भी।

"डाकसाब ये मेरा प्रिय रंग है। लाल। वैसे अब सब तरफ इसमें गुलाबी रंग दिखलायी पड़ता है। गुलाबी या बैंगनी।"

मैंने उनके चेहरे पर रंगत लाने के लिए मजाक का पुट दिया था। सच्चाई जिसे आप चुटकुला समझ सकें। परंतु वे घिर गये थे। खीज। उन्होंने अपनी आंखों की सीध में मेरी नजरों को ले लिया। निष्प्राण। सर्द हो उठे, ठीक ठीक बतलायें। यह बहुत जरूरी है। कलर ब्लाइंडनेस का खतरा होगा, समझ रहे हैं आप। रंगों को गम्भीरता से लें।

"मुझे ये लाल लगता है।"

"लगता है नहीं। क्या है।"

"लाल।"

"ये?"

"सफेद।"

"ये?"

"केसरिया।"

"ये?"

"हरा।"

चतुराई से पुराना कार्ड मिलाया, "अब ये?"

"लाल है और क्या।"

लाल। सफेद। हरा। सफेद। लाल। सफेद लाल।

उनका काम पूरा हुआ। कार्ड समेट कर उन्होंने डब्बे में डाल दिये। चौकन्नी निगाहें उन पर लगी थीं ठीक? डॉक्टर देसाई?

उसने सिर हिलाया। बूढ़े डॉक्टर हंस कर बोले, नौकरी में लेने के पहले ये जान लेना जरूरी होता है कि रंग ठीक ठीक पहचाने जा रहे हैं या नहीं? बहुत से ऐसे हैं जिन्हें लाल रंग सफेद दिखायी देता है या सफेद को ही लाल मानते हैं। कुछ को हरा ही हरा। हरा के अलावा कुछ नहीं। रंग अपने आप में कुछ होते हैं, दिखायी कुछ और देते हैं।

चुपचाप काम कर रहे डॉक्टर ने कहा, देसाई के साथ यही हुआ। वे रंग नहीं पहचान पाये। जंगी प्रेक्टिस और परिवार छोड़ यहां पड़े हैं त्यागी जी।

"नो पर्सनल कमेण्ट गुप्ता। घरेलू बातें यहां नहीं।"

बूढ़े डॉक्टर ने तुरंत कहा। सफाई देते हुए बोले, तबादले तो होते ही रहते हैं। क्या बच्चों के डॉक्टर बड़ों के मेरुदंड नहीं छू सकते? बकवास। डाक्टर गुप्ता सहम गये। वे इतने धीरे से फुसफुसाये थे कि उनके बगल में बैठे देसाई को अपनी धुंध में सुनायी नहीं देता। पर बूढ़ा डॉक्टर हजारों सेण्टीमीटर से ध्वनियां, रंग, खुशबू सोख रहा था। उसने दूसरा पान का बीड़ा निकाला। मुंह में ठूंसा, "लगभग काम पूरा हो गया है। थोड़ी सी बातचीत करना बाकी है। इधर आ जाइये।"

मैं सतर्क हो गया। ये मजूरी पर रखे जाने वाले मजदूर के गठीले बदन को छू छू कर नहीं देख

www.tadbhav.com

रहे हैं। ये सिर्फ प्लास्टिक पर छपी एक्सरे से छिपी हड्डियों की ही नहीं टटोल रहे हैं। यह बूढ़ा डाक्टर हरेक जांच का परिणाम और विवरण बतला कर मेरे शरीर के अंदर अपनी गांठदार उंगलियां डालने का आसान रास्ता बनाता है। कमीज की जेब में से जैसे भूला हुआ सिक्का।

उसके सामने मैं तन कर बैठ गया। मानो अभी इसी क्षण मिला हूं।

वह रुका। पान गाल में धंस गया। कोई हलचल नहीं। सांस नहीं। फिर अचानक हंसी आराम से बैठिये मदन जी।

उसने पहली बार मेरा नाम लिया था। बेहद आत्मीयता से। मैं वैसा ही बना रहा। कुहनियों को हथ्थों से सटाये।

"आपने बतलाया था एक आदमी दूसरे आदमी से दूर दूर तक जुड़ सकता है। टर्मिनल के सहारे।"

"नहीं। आदमी नहीं। मैंने कहा था एक जिला दूसरे जिले से टर्मिनल के सहारे जुड़ा रहता है।"

याद करने का अभिनय करते हुए उसने ठीक किया, "हां। हां। जिला। आप ये बतलायें डॉक्टर देसाई ने आपको कुल कितने रंग के कार्ड दिखलाये थे? कुल संख्या?"

"चार।"

"चार? पर रंग तो सात होते हैं?"

वह चौंकने का अभिनय कर फिर हंसा। मैंने बेरुखी से कहा, "होंगे। पर देखे चार ही। इतने ही रंग दिखाये गये।"

मेरी बेरुखी को बूढ़ा डॉक्टर भांप गया। वह हंसी एकाएक भूल गया। उसकी जगह गाल की झुर्रियां कांपी। उंगलियां संड़सी की तरह आपस में जकड़ गयीं। अच्छा! इसकी हंसी कमजोरियों का पूर्वाभ्यास हैं। कुछ लोग ताकत पाने के लिए हंसी की कमचियां लगाते हैं। पूछा, जीवन के प्रति दृष्टिकोण क्या है आपका?

यह बूढ़ा डॉक्टर चिकित्सा की हद से बाहर दौड़ लगा रहा है। कोई नयी तरकीब है? अच्छा बताता हूं! खेलो फुटबाल।

"मार्क्स ने आम आदमी को जीने की वैज्ञानिक पद्धति दी है। सामूहिक साझेदारी में मेरा विश्वास है। सरप्लस वैल्यू और द्वंद्वात्मक भौतिकवाद इत्यादि की चपेट है। मेरा मतलब है कि मार्क्स लेनिन तो खैर हमारे यहां अपनाने के पहले ही विदा हो गये। गांधी की तरह। जिनकी तस्वीर आपने ऊपर टांग रखी है। उनके परिवार नियोजन के दृष्टिकोण से आप भी पूरी तरह सहमत होंगे। बात ये है कि मैं जीवन में एक ओर बुद्ध के मज्जम निकाय को प्रवेश देना चाहता हूं, वहीं लता मंगेशकर की आवाज को भी। यानी सुखद संगीत।" मुझे लगा लता से बूढ़ा खुश होगा।

बूढ़ा डॉक्टर मुंह बाये मेरा प्रलाप सुनता रहा। वह खुश हुआ, हंसी लौट आयी। दाद देते हुए बोला जीवन इतना ही विस्तृत होना चाहिए। आखिरकार वे हमारी सुर साम्राज्ञी थीं खैर, अब यह चित्र देखिये। इसमें साधारण सा चित्र रेखाओं से बनाया गया है। यह औरत। नग्न। घर। जानवर। दो लोग। टूटे बर्तन। सदरी पहने पेटू आदमी। टोपी। अब आप छोटी सी कहानी इन पात्रों को देख कर सुनाइये।

ओ हो। यह डॉक्टर मेरे मन की जांच कर रहा है। स्मृति। संख्या। भावनाएं। एकाग्रता। स्वभाव। ऐसी कई चित्र आधारित कथाएं साक्षात्कारों के समय गुजरी हैं। थोड़े से टोटके हैं। प्रतियोगिता दर्पण से सीखे। सकारात्मक बने रहने की मुद्रा – "यह एक प्रसन्न स्त्री का जीवन है जो हमारे प्रदेश के सबसे पिछड़े इलाके में रहती है। दो अधिकारी किसी योजना के तहत इसे जानवर भेंट कर रहे हैं। समझ लीजिये गौ वात्सल्य योजना। वह कभी अपने लोकचित्रों से सजे घर को देखती है, कभी टूटे बर्तनों को। जानवर पाकर मारे खुशी के वह नग्न सी नाच उठी है। कुछ वस्त्र हैं जो चिपके होने के कारण दिखलायी नहीं पड़ रहे हैं। दोनों लोग जो कि अधिकारी होते हैं, मोटे आदमी की तरह दिखते वृक्ष के

www.tadbhav.com

पास योजना के सफल हो जाने पर हंस रहे हैं।"

टोपी बचा गया। थकान के कारण गले की नस चमकने लगी। जान कर बोले झूठ की अविराम थकान। छूंछा। निपट। अब इससे ज्यादा कुछ नहीं। कुछ भी नहीं। ग्लानि।

बूढ़ा डॉक्टर कुर्सी से उठा, हमारी शुभकामनाएं हैं। आगे कभी भेंट होगी। मैं डॉक्टर माथुर हूं।

"सर। आप सभी को नमस्ते।"

बूढ़े डॉक्टर ने हाथ बढ़ाया। लम्बा गांठदार भरपूर हाथ। एक पेड़ की समूची छाल उतार ली जाती है। जमीन पर गड़ा रह कर भी वह सूखता चला जाता है। नंगा। उसकी ही एक डगाल। यह मृत हाथ। धूसर।

एम्बुलेन्स के चालक की जगह पर वह बैठा था। ईंटों पर खड़ी एम्बुलेन्स। बीड़ी का लम्बा कश लेकर वह जोर से बोला, भाई साहब हो गया।

"अरे यहां कहां?"

खिलखिलाया, यों ही। सेवा में! उन्हें देखो कैसे बैठे हैं। कहता न था। आपका काम जल्दी होगा। हमें तो लगता है फिर आना पड़ेगा।

घोड़े का मुंह बैठे बैठे स्याह हो गया था। चेहरे पर साफ छपा था, बेकार यहां आये।

"ठीक है। अच्छा है। मेडिकल बिल बनाने के साथ ही साथ बिना पहियों की ये गाड़ी चलाना भी तुम सीख लोगे।"

धूप अपनी चमक खो चुकी थी। मोड़ पर आटो जरूर मिल जायेगा। नृत्य विकास केन्द्र के सामने कुर्सियां कतार से रखी हैं। एक नर्तकी पैर ऊपर उठाये। एक पैर कुर्सी पर। ताजा रंगों से बुनी कुर्सी। नर्तकी मयूरपंखी सुनहरी साड़ी पहने है। दो पैरों में दूरी होने के कारण एक आंचल पंख की तरह फैला है। आभूषण ही आभूषण। करधनी। बाजूबंद। बुंदे। मुकुट। गालों और ओंठ पर तीखा रंग। वह मयूर की तरह तनी है। नितम्बों के सहारे।

"ठीक ठीक बतलाओ। लूट रहे हो।"

नर्तकी की तेज कर्कश आवाज दूर तक आती है।

"चुप क्यों हो। जल्दी करो। प्रोग्राम करना है। तुम लोगों पर दया करो और मरो। लूट रहे हो। मैं पाई पाई का हिसाब रखती हूं।

"बताओ। ये रहे। बस इतना ही। एक पैसा ज्यादा नहीं।"

नर्तकी की, काजल के फ्रेम में फंसी सुंदर बड़ी बड़ी आंखों से उसको कोई मतलब न था। जमीन पर उकडूं बैठा।

बचे खुचे प्लास्टिक के तार वह टटोल कर बीन रहा था। कुर्सियां एक कतार में दूर से भी सजी धजी दिखती थीं। उनमें एक भी रंग मयूरपंखी नहीं था।

बी सी एल। ब्रिटेन की किताबों से अंग्रेजों के रहन सहन के अनुरूप गम्भीर और गहरी चुप्पी में पुरानी याद को बनाये रखने की कोशिश। अपारदर्शी कांच का दरवाजा एक दीवार है जो ब्रिटेन की ठंडी दुनिया में खुलता है। सीढ़ियां चढ़ते लोगों में कदम कदम सतरपन आता है। चाक चौबस्त। शब्द धीरे धीरे उनमें पिघला सीसा भरते हैं। उन्हें पाइप या चुरुट पीने की अनुमति होती तो अपनी इच्छा को वे दबाते नहीं। यह पुस्तकालय ही क्यों आसपास बड़ी बाउंड्री के अंदर फैली बहुमंजिली इमारतें, रेस्त्रां, लोकशिल्प की दुकानें बगीचे की तरह आदमी में बस जाती हैं। यह इलाका हमारे जीवन में बहुत बड़ा बैठकखाना है। किताबों में छपी कविताएं, दुर्लभ आदिवासी वस्त्र, कोमल सरसराहटें, कॉफी बोर्ड में भूंजे जाते कॉफी बीज की गाढ़ी खुशबू। मंजरी के लिए बी सी एल जरूरी आदत थी। नायाब तकनीकी पुस्तकें। पर मेरे

www.tadbhav.com

साथ सट कर चलते हुए वह लाड से बोली, "अब यहां ढंग से बैठ कर सुकून से पढ़ नहीं पाती।" मैं जानबूझ कर हक्का बक्का हो जाता, "क्यों?।"

"पूछते हो क्यों? उन चुम्बनों की याद नहीं आती? उन जगहों पर।"

मंजरी इस तरह बोलती है जैसे किसी जरूरी कामकाज को याद कर रही हो। हालांकि उसके कान की लौ धीरे धीरे सुलगने लगती। उन पर अटके गोल मोती वैसे ही रहते। शुभ्र। चमकदार।

"मेरे लिए यह लाइब्रेरी नहीं हैं चुम्बनघर है। मैं इस पूरे इलाके को स्नानघर में बदल देना चाहता हूं। यह झरना भी।"

वह ठीक कहती थी। जगहें स्मृतियों में साथ चलती हैं। जगहें धीरे धीरे अंदर अपना आकार खोजती हैं। कोई फर्क नहीं पड़ता। उन जगहों पर बने स्तूप अड़चन नहीं डालते। वे छायाओं से बन जाते हैं। सपाट। उन पर हरेक अपनी तरह का नक्शा फैला सकते हैं। फैलाते हैं। बिना किसी से कुछ भी कहे। चौथी सीढ़ी के पास एक कोना था। तीन दीवारों से मुंदा। ठिठका। अब यहां बड़े पत्तों का एक गमला है। वहां पहले एक खाली जगह थी। सबसे पहले यहां अपने शरीर के समूचे रक्त को भूमि में समाते महसूस किया था। आहिस्ता से बड़ी पत्ती पर हाथ फेरा। वह लगातार डोल रही थी। मैं दरवाजे को अंदर धकेलने लगा। उस पर वैसा करने को लिखा था। घुसते ही हैट, रैनकोट और छाते टांगने के लिए स्टैण्ड बना है। आईना। सारी खूंटियां खाली हैं। वे क्या नहीं जानते सोला हैट पहनने वाले लोग हैं नहीं। अथवा झिझक ने कुछ सिरों को नंगा कर दिया है।

मंजरी किसी बड़ी मैग्जीन में तल्लीन है। आसपास बैठे लोग भी पढ़ रहे हैं। इस ओर पुस्तकों की बहुत सारी शैल्फ हैं। उनके साथ लगा हुआ महारानी का बड़ा फोटोफ्रेम है। वैसे ही गहरे रंग जैसे मुख्यमंत्री के फोटो में देखे थे। मंजरी तक जाने के लिए पात्रो साहब के पास से गुजरना पड़ेगा। अभिवादन में एक कड़क मुस्कान। वे सदैव सूट में रहते हैं। नेकटाई। कुर्सी पर सीधे। घूमती कुर्सी और घूमने वाली गोल कैटलाग टेबिल। सदस्यों के पतों से भी भरी। वे खास अंदाज में किताबों के बारे में बतलाते हैं। अंग्रेजी में ही। बाहर अपनी पत्नी के साथ आलू की खरीदारी करते उन्हें उड़िया बोलते पाया है। कुछ कुछ झुके हुए। कालाहांडी और लंदन के बीच दो कमरों की दूरी थी। उसे वे रोज नापते थे।

"पात्रो साहब, आप कॉडवैल की किताबें क्यों नहीं रखते?" कोई उन पर झुका हुआ पूछता है।

"नहीं होंगी वहां।"

"हैं पात्रो साहब। पर थिंक टैंक में उन्हें रख न पाये। अब तो बुला ही सकते हैं। कोई खतरा नहीं। आ गयी हैं उसकी किताबें।"

पात्रो साहब की समझ में आ गया। कॉडवैल नहीं इस आदमी की नीति। चौंके। सहज हुए। बोले, "चौथी शैल्फ देखिये। आर में। रैमण्ड विलियम है। आपको शिकायत नहीं होगी।"

"सच!"

दोस्ताना लहजे में पात्रो साहब बोले, "बात ये है कि कुछ लोगों पर छाप पड़ जाती है। पड़ती है कि नहीं। पड़ी होगी तो रह गये होंगे। पर बाकी हमारे पास है नहीं यह आप कैसे कह सकते हैं।"

ये बेवजह सैद्धांतिक चर्चा कर रहे हैं। मैं उनसे गुजरता उन्हें अभिवादन करता मंजरी के पीछे खड़ा हो गया। बड़े बड़े मूर्तिशिल्प के फोटोग्राफ। ज्यों का त्यों आदमी को जमा दिया गया हो। खाते खाते रुक गये हाथ। हंसते हंसते रुक गये ओंठ।

"यह मैं हूं।"

बहुत धीमे से बोल पार्क की बेन्च पर बैठे आदमी के ऊपर उंगली रखी। वह जमा था। सीमेण्ट चूकर जहां की तहां जम गयी थी। फूल। चिड़िया। हैट। न। मैं जमा नहीं था। मंजरी के केश हवा से बाहों को गुदगुदा रहे थे। उसने पत्रिका बंद कर दी। स्टूडियो इंटरनेशनल।

"चलें?"

www.tadbhav.com

"नहीं। थोड़ा बैठूंगा। कंडीशनर की हवा तो ले लूं। थक गया।"

"नौकरी के लिए टंच मिले कि नहीं। क्या हुआ कि थक गये।"

मुस्कान के ऊपर आंखों में शरारत कौंध रही थी।

"तुम बताओ! वहां तो एक लड़की मेरुदंड की हालत देख रही थी।"

"ऊंह। लड़की नहीं डॉक्टर। वैसे तुम्हें कम्प्यूटर से उलझना है। कोई होटल की नौकरी नहीं, मन।"

वह मुझे मदन नहीं कहती। मन। धीमे से। मैं उकता देने वाली जांच के बारे में मंजरी से बात नहीं करना चाहता। परंतु होता ऐसा ही है। सारे बने बनाये संवाद कांच की तरह बिखर जाते हैं। बच रहती हैं डंडियां। प्रचलित बोलचाल और रुआंसा मुंह लिए। मैं सोचता था पहला जोरदार चुम्बन हमें एकमेक कर देगा। मैं अपनी भावनाओं की क्यारी तुरंत बना लिया करूंगा। हल्के रंगीन फूल। ऐसा हुआ नहीं। सन् सन्। खून में दौड़ती तेलमुहीं चीटिंयां। नहीं नहीं। यह दबाव घुप्प। यह नशा। मैं हरदम प्रतीक्षा किया गया हूं। त्वचा पर वाष्प बनते कपूर की। या स्प्रिट। मंजरी इन सबके बीच एक झूला थी। पहचाने हुए बिन्दु पर वापिस आ जाने के लिए। फिर से।

"मन। कुछ बोलो क्या सोच रहे हो? अच्छा ऐसा करते हैं तुम रिलेक्स करो तब तक मैं कुछ किताबें ले लेती हूं। तुम्हारे लिए नयी मैग्जीन इशू करा लूं?"

"नहीं। मैं अभी इन कम्प्यूटर की सड़ी पत्रिकाओं से ऊब गया हूं। तुम देखो। मेरे अंदर कम्प्यूटर का खतरनाक वायरस घुस गया है।"

"अरे वह सब तो तुम धीरे धीरे भूलते जाओगे। इस बी सी एल को। हमारे घर को? वायरस का विरोधी डालते हुए वह उठी। मैं भी उठा। सीढ़ियों पर बैठ कर दुकानों की हलचल देखना अच्छा है और उन्हें भी जो सीढ़ियां चढ़ते हुए घूरते हैं। मंजरी को देर होगी ही। वह आयी है मेरे लिए परंतु उसके लिए यह खाली समय है। वह पुस्तकों और अतीत की टोह में घुसपैठ करते बड़े लोगों के अभिवादन से खाली समय को पूर लेगी।

रेस्त्रां खाली है। सोया हुआ। अंदर यहां से बैठ कर लाइब्रेरी, सीढ़ियां और तांबे सी धूप दिखलायी देती है। रंगीन कांच से। उस तरफ से कुछ भी नहीं। बस रेस्त्रां की काली चमक। मंजरी को सीढ़ियों पर नहीं मिला हूं और यहां हूं, वह जानती है। वह नहीं जानती जीवन से अदृश्य हो गये बहुत सारे अटपटे शब्द लौट आते हैं। बिना हिचक जगह बनाने। और आश्चर्य मैंने कभी नहीं कहा प्रेम करने के बारे में। दरअसल बने बनाये, देखे दिखाये अनुभवों के जरिये खो देने के तरीके अधिक पता लगते हैं।

"क्या तुमने खाने के लिए बोल दिया, मन?"

"मैंने नहीं कहा। कुछ खास भूख भी नहीं।"

"नहीं। मैं जानती हूं। दिन भर से कुछ खाया नहीं होगा तुमने। मैं कहती हूं।"

हमेशा वही वेटर को बुलाती है। ऐसे व्यंजन जो तुरंत परोसे न जा सकें। ऐसे जिन्हें आधे से अधिक प्लेट में छोड़ते हुए अफसोस करते रहें।

"मंजरी, पिछली बार यहां से गया था। सारा कुछ उलट गया। मालूम नहीं क्यों।"

उसका चेहरा मलिन हो गया। चेहरे पर फैलते बाल। आंखों में सहसा चला आया सूनापन। सब कुछ जानती हो फिर भी कह रही हो, शायद खाने में कुछ गलत आ गया।

उसने ग्लास उठाया। दो घूंट। रखा। पानी बहुत साफ पानी गोल घेरे में हिल रहा था।

"मंजरी। बात ये है कि तुमसे मिलने के बाद फिर। खैर छोड़ो!"

"नहीं। नहीं। कहो।"

उसने हाथ मेरे हाथ पर रखा। नरम स्निग्ध ठंडी त्वचा मेरे शरीर में समा रही है। मेरी त्वचा रोंयेदार कुनकुनी है, पता लगता है।

"जरूरत से अधिक भावुक बातें करने लगता हूं। शायद ऐसी भावनाएं जिनका कोई मतलब

www.tadbhav.com

नहीं है। कोई सिरा नहीं। उन्हें कोई नहीं पूछता, न घर में, न दोस्तों के बीच। इसलिए लगता है आस पास का आयतन सिकुड़ता जा रहा है।"

"अच्छा!"

"हां। मुझे लगता है जैसे छिले संतरे सा हूं। और जैसे इसी दबाव की प्रतीक्षा किया करता हूं।"

"ओह। तभी।"

उसका चेहरा रंग गया। आठ दस चुम्बनों की बौछार सा। उसने अपने दोनों हाथों में मेरा हाथ ले लिया। निर्वाक् गुदगुदाते हुए मेरी घड़ी का बेल्ट खोला। पीछे लिखे तमाम शब्दों को पढ़ने लगी। घड़ी में चाभी देने लगी। कान के पास ले गयी। फिर सूंघा। स्टील, चमड़े का बेल्ट, मेरा पसीना।

"तुम।"

"क्या?"

"हमारी आदतें क्या एक सी हो रही हैं। आदतें या बीमारियां?"

मैं तत्काल बाहर निकल आया। बंद सीप से। हंसा। आहिस्ता से बोला, "अब ये आदत कम से कम दुहराऊंगा नहीं। मैं अब खाता पीता अधिकारी बनने जा रहा हूं।"

बेकार सी बात। कोई एक सूराख। जिससे वह चुपचाप प्रवेश कर सके। हमारी आदतें एक सी हो रही हैं।

अटपटी डबलरोटियों और मशरूम के सूप में बात दब गयी।

"मंजरी मुझे जल्दी ही जाना होगा। उस शहर को, जहां से पढ़ लिख कर बड़ा हुआ।"

"क्यों?"

"उस दौरान के पुलिस के कागजात भेज दिये गये हैं या नहीं। देख कर आऊं। देर हो गयी तब नियुक्ति भी देर से होगी।"

मंजरी भी लौट आयी थी। उसने मेरी घड़ी पहन ली थी। पुरानी मेरे पापा की दी हुई घड़ी। ठीक उसके बगल में सोने की चमकती चूड़ी में फंसी घड़ी थी। उसने बताया था अपनी नौकरी की पहली खरीदी थी यह। प्राधिकरण। मनचाही।

"मन। तुम इस शहर में ही नौकरी करोगे न?"

"मैं नहीं जानता। मंजरी किसी ने कहा कि यह गुमशुदा लोगों का बसाया नगर है। मैं भी इस तरह कहीं चला जाऊंगा।"

"नहीं। नहीं। यह नहीं होगा।"

वह हड़बड़ा कर उठ गयी। उठा। बिल देने में हमेशा युद्ध हुआ करता है। अब कुछ दिनों से ऐसा नहीं होता। मैं जबरदस्ती नहीं करता। अब हिसाब बनाया करता हूं। बाहर आते हुए उसने विश्वास से कहा, "यह हमारा शहर है और हम यहां रहेंगे।"

एक गलियारा था। जो भव्य दुकानों के मुहाने पर खुलता था। गलियारे के दोनों ओर एक्जास्ट पंखे चल रहे थे। पूरी जगह को घनी गाढ़ी कॉफी की गंध भरते। बीज भुन रहे थे। मैंने उसकी बांह को थाम रखा था। कमर पर मैंने हथेली पसार दी। दो अलग तापमान पर बहती पांच नहरें। मेरी अंगुलियां।

वह नींद में चल रही है। स्वर घुले हुए थे... "मन, चलो, तुम्हारे लिए कुछ खरीदना है। एक मंहगी टाई, कफलिंक। आखिर तुम नयी जिन्दगी शुरू करने वाले हो।"

रुक गया। ऐसा लगा हमारी नींद को कैंची से काट दिया है उसने। अच्छा! शायद इसीलिए वह कमर की अदेखी बनायी रेखा पर जाने दे रही है। हाथ हट गये। कठोर हो गया... "नयी जिन्दगी या नौकरी।"

"वही।"

मंजरी अभी भी नींद में थी।

www.tadbhav.com

"वही नहीं। तुम्हारे साथ जिन्दगी का मायने नौकरी नहीं।"

"क्या? क्या?"

मंजरी हड़बड़ा गयी। अपनी कठोरता पर पानी डालते हुए बोला, "टाई वगैरह पसंद नहीं मंजरी। मैं एक चप्पलघसीट वैज्ञानिक बनना चाहता हूं।"

"हां!"

उसकी आंखों में मेरे अपने ऐसे ही बने रहने पर मुग्ध भाव था। उसके कीमती सेण्ट, तमाम सुविधाओं, ऊंचे शिष्टाचारों के किनारे एक ऐसा कोई स्थल था जहां मेरी अटपटी कार्यवाही की बाड़ बनी थी। खेल मैदान।

"अच्छा चलो तुम्हारे लिए स्क्रेप बुक खरीदते हैं। चमड़े की जिल्द।"

"फिलहाल तुम मेरी घड़ी वापिस करो।"

अभी भी तल्खी का एक धागा अटका हुआ था।

लाड से बोली, "नहीं। यह नहीं। तुम मेरी घड़ी पहन लो। जंचोगे।"

अनायास हंसी फूट गयी।

क्या करूं इस लड़की का?

"चप्पलघसीट वैज्ञानिक चलिये। चलें?"

"इस गुमशुदा लोगों के शहर से मैं चला जाऊंगा।"

मंजरी ने जाने के लिए नहीं कहा था। वह भी तो नौकरी कर रही है। इसी शहर में। हंसी। पूरा शहर खाली नहीं होता। इम्प्लायमेण्ट एक्सचेंज की छत पर लम्बी घास सूख रही है। और उसमें 'दोपहर के भोजनः शिक्षण कार्यक्रम नियोजन' का कठिन दफ्तर खुल गया है।

बाहर बी सी एल से सट कर एयर कंडीशनर की दुकान थी। सुरेश वहीं था। दोनों हाथों से वाद्य सा बजाता। उसके सामने लोग खड़े थे। जैसे उसे सुन रहे हों।

"वह सुरेश है। मेरा पुराना दोस्त। मालूम नहीं यहां कैसे?"

"क्या तुम गुमशुदगी रिपोर्ट करोगे?"

"हम जरूर मिलंगे। पुराना दोस्त खुशियों का रजिस्टर होता है।"

मन पुलक से भर गया, "तुम उसे देखना। आनंद से रेकने लगेगा।"

मंजरी सट गयी। उसके स्पर्श में पनीर सी कोमलता। हल्की ठंडी। मेरे हाथों में जांचों की रिपोर्ट न होती तो उसे भर लेता। हम इतने धीरे धीरे चल रहे थे कि हमें सुरेश समूचा देख सकता था। उसकी आंखें एक दो बार घूमी होंगी। सिर घूमता था और हाथ। हम इतने पास आ गये कि उसकी बात का टुकड़ा लोक पाये 'आपके कमरे से बहार जाते ही अपने आप यह बंद हो जायेगा'।

अपनी बात खत्म कर उसने लम्बी सांस ली। मेरी तरफ आधी हथेली का हाथ हिलाया और जल्द उन्हें दुकान के अंदर ले गया। वे सभी कमाल है! के जादू में डूबे थे।

मंजरी ने मुझे देखा। पूछा नहीं, कितना बुरा लगा।

एक ग्लास पानी पीने का अंतराल था। वह बाहर आ गया। झपट कर गले लगा और जोर जोर से हंसने लगा। अभी तक करीने से था। हल्के रंग की शर्ट। महंगी बेल्ट। टाई। जूते। बड़ा सा मोबाइल। मेहनत रूपरंग से टपक रहा था।

"तू साले यहां कहां।"

उसके पास बड़ा खजाना था। खोला नहीं। मंजरी थी। मित्रमिलन पर मुस्का रही थी।

"चलो कुछ खायें, पियें।"

"पहले तू बता यहां कहां?"

सुरेश ने कहा, अरे यार! कम्पनियां लगती छूटती रहती हैं। वहां बैंक में था सेल्स विंग में।

www.tadbhav.com

क्या कहते हैं, सिकुड़ गयी। फेंक दिया। यहां डिमांस्ट्रेशन के लिए आया हूं। अब तो इतने सेल नम्बर बदल गये कि याद नहीं रहता।

"अब ठंडे में है?"

"और क्या!" रुका। बोला, "ठंडा क्या, दिन कैसे गुजर जाते हैं, पता ही नहीं लगता।"

मंजरी को उसने देखा। बोलना कुछ था नहीं। कहा, आप भी चलिये कुछ खाते हैं। अभी से मंजरी जैसे हम दोनों से अलग हो रही हो। मैंने सुरेश की बात दुहरायी। दुविधा में थी। तुरंत जाने नहीं देना है।

"मंजरी मेरे पेपर्स अभी तुम रख लो।"

क्या है? सुरेश हाथ बढ़ा कर मुझसे लेने लगा। अटपटापन नहीं। सीमा नहीं।

"तू क्या करेगा जान कर। हड्डियों की जांच है। रीढ़ की। जो तेरे पास नहीं है।"

"अभी आप इनसे जी भर कर ट्रीट लीजिये। सरकारी नौकरी के लिए मेडिकल जांच है।"

बहुत दिनों बाद पीठ पर धौलधप्प हुई।

सुरेश मंजरी को बताने लगा, सरकारी नौकरी में कितने मजे हैं। बोला, लड़के के घर लड़की वाले देखने आये कि मामला क्या है। बार बार पूछने लगे लड़के का बाप क्या करता है? अचरज में थे सब। लोग पड़ताल करते हैं कि लड़का कहां है, कहां तक जायेगा। ऐसा क्यों?

मंजरी समझ गयी इस बात में वह उसे लपेट रहा है। पूछा, ऐसा क्यों?

"अरे! लड़के का बाप सरकारी नौकरी में है। चिन्ता नहीं। लड़के की नौकरी छूटेगी तो कम से कम ससुर कुछ न कुछ तो खिलायेगा।"

दोनों हंसने लगे। मैं चुप हूं। अभी मालूम नहीं है। बड़े भाई लौट आये हैं। उनकी कम्पनी का बहुत लम्बा नाम था। यकायक शटर गिर गया। और कल पापा की पेंशन के लिए 'जीवित रहने का प्रमाणपत्र' बनवाना है। सालाना कर्मकांड। डॉक्टर को पकड़ना है।

अभी हम उसी रेस्टोरेण्ट में जायेंगे। कॉफी की घनी खुशबू पार कर।

www.tadbhav.com